International Journal of Information Movement Vol.6 Issue IX (January 2022)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 8-11

'वर्तमान में वसुधैव-कुटुम्बकम की दार्शनिक प्रासंगिकता'

Shiv Nandan Maurya
Research Scholar
Department of Philosophy
University of Delhi
Email: nshiv2025@gmail.com

भारतीय दर्शन संस्कृति सभ्यता तथा परंपरा वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन पर आधारित है जो साम-वेदी परंपरा के महा-उपनिषद सहित कई ग्रंथों में लिपिबद्ध है जिसका शाब्दिक अर्थ है संपूर्ण धरती ही परिवार है।

अयम निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥[i]

अर्थात यह अपना बन्धु है और यह अपना बन्धु नहीं है, इस तरह की गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों की तो (सम्पूर्ण) धरती ही परिवार है।

जैसे ही वसुदेव कुटुंबकम शब्द हमारे मन मस्तिष्क के पटल पर आता है तो हम इसकी कई रूपों में व्याख्या कर सकते हैं यथा समाज की दृष्टि से राजनी के दृष्टिकोण से, ब्रह्मांड के (cosmological point of view) से,नृवैज्ञानिक (Anthropology)दृष्टिकोण से (सभी मनुष्य), धार्मिक दृष्टि से दर्शन और नैतिकता के दृष्टिकोण से भी ।

वसुधैव कुटुंबकम के वसुधा शब्द में 'धा' जो है वह धारण शक्ति से परिचायक होता है। यहां धारण शब्द में पोषण और पल्लवन निहित है मतलब जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति जहां संपूर्ण क्रियाकलाप करता है वह क्षेत्र परिक्षेत्र वसुधा है। इस दृष्टि से हम सभी समान है यहां यह परिवार केवल मनुष्यों का ही नहीं वरन संपूर्ण ब्रह्मांड एक कुटुंब है । हम इस पृथ्वी को 'माता' कहते हैं क्योंकि यही हमें जीवन के अस्तित्व का आधार प्रदान करती है।

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः''[ii]

वसुधैव कुटुंबकम समूह वाद का दर्शन (Philosophy of Collectivism) है। जहां संपूर्ण चराचर जगत एक परिवार की तरह है जिनके मध्य परस्पर प्रेम भाईचारा और घनिष्ठता होती है। जिनका चित उदार होता है जहां हम एक दूसरे के आत्मसम्मान को ध्यान में रखते हुए, मनुष्य को केंद्र में ना रख कर संपूर्ण ब्रह्मांड के कल्याण की भावना से कर्म करते हुए जीवन यापन करते हैं। यहां उदार चरित्र से आशय ऐसे व्यक्ति से है जो अपने पराए का भेद नहीं करते उनका दृष्टिकोण व्यापक होता है जो लोग संग्रह के लिए कार्य करते हैं। यहां लोक संग्रह का अर्थ पूरे विश्व का एकीकरण, संवर्धन तथा प्रोन्नयन ही समझ सकते हैं।[iii]

प्रश्न है कि वसुधैव कुटुंबकम भारतीय संस्कृत का ध्येय वाक्य क्यों बन गया? भारत राष्ट्र की अस्मिता का मूल तत्व संस्कृति है। यहां दर्शन ही संस्कृति का मूल तत्व है। वसुधैव कुटुंबकम भारतीय संस्कृति की समस्त विशेषताओं को उसके धार्मिक और उसके परंपरा को यह छोटा सा वाक्य अपने में समाहित करता है। भारतीय दर्शन में प्राचीन काल

से अर्वाचीन काल तक सर्वत्र अद्वैत की प्रधानता रही है। वेदांत दर्शन पर वसुधैव कुटुंबकम की परिकल्पना आधारित है। सारी विभेदताओं के भीतर एक ही तत्व का ज्ञान यहां के उपनिषदों में मिलता है। यह सत्य है कि समाज में विभेद है परंतु हम अद्वैत को लेकर चलते हैं तो वहां भेद नहीं होगा क्योंकि विभेद तो भ्रम मात्र है। वह व्यक्ति के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि, वस्तु को किस नजरिए से देखता है।

कुछ ऐसा ही ज्ञान भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं-
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी।।[i v]

अर्थात जो संपूर्ण प्राणियों को अद्वैत भावना से देखता है, सब के साथ मैत्री, करुणा, माया-मोह से रहित और नम्रता पूर्ण व्यवहार करता है, जो संपूर्ण प्राणियों के प्रति क्षमा भाव रखता है उनके साथ सुख और दुःख में समान रहता है वहीं पूर्ण पुरुष है। वहीं पर मनुष्य वसुधैव कुटुंबकम की भावना को आत्मसात करता है। वसुधैव कुटुंबकम की भावना आत्मा के पूर्ण विस्तार का प्रतीक है।

सांख्य दर्शन में सत्व, रजस और तमस गुण का वर्णन है। रजस से गति का ज्ञान होता है, तमस से अधोगति जबकि सतोगुण उर्ध्व गति का प्रतीक है। सतोगुण प्रधान व्यक्ति स्वार्थ से परे उठ दूसरों की चेतना को, वेदना को अनुभूत करते हुए संपूर्ण विश्व को एक समाज के रूप में देखता है। यहीं से उसे सहज करुणा ,सहज चेतना की अनुभूत करता है और इसी समायोजन में वसुधैव कुटुंबकम होता है। जो सत-चित-आनंद की स्थिति का प्रारंभिक बिंदु हुए हैं और उसकी परिणिति भी कराने वाला है।

बौद्ध दर्शन में करुणाप्लावित बोधिसत्व संपूर्ण जगत के प्राणियों के मुक्ति के बाद ही अपने मुक्ति का इच्छा रखता है। बोधिसत्व कहते हैं कि लोक के सारे कलि-कलुषों को मैं अपने ऊपर लेता हूँ, इसलिए कि लोग मुक्त हो सके।

'कलिकलुषकृतानी यानि लोके मयि तानि पतन्तु विमुच्यतां ही लोके।'[v]

दुखों के प्रति संवेदनशीलता बौद्ध दर्शन के दार्शनिक परिकल्पनाओं का मार्गदर्शक सिद्धांत रहा है। प्रश्न है कि सार्वभौम दुख से छुटकारा कैसे पा सकते हैं क्या सिद्धान्ततः केवल वसुधैव कुटुंबकम की बात करने पर? नहीं, उसका क्रियान्वयन करना पडेगा।परंतु क्रियान्वयन प्रेम एवं महा करुणा के बिना संभव नहीं है बौद्ध दर्शन महाकरुणा और उपाय कौशल के द्वारा लोगों के दुखों का निवारण करता है, साथ-साथ व संपूर्ण प्रकृति के कल्याण के लिए भी कार्यरत है।

जैन दर्शन में तो पूर्णतः वसुदेव कुटुंबकम समाहित है उसका दृष्टिकोण सापेक्ष वादी है। वह एक साथ एक ही वस्तु में कई गुण को स्वीकार करता है जिसे एक ज्ञानी पुरुष, कैवल्य ही देख सकता है। वह पूर्णता यह नहीं कहता कि यही ज्ञान ही सत्य है। किसी भी निर्णय के पहले ये 'स्यात' शब्द का प्रयोग करते हैं। अर्थात यह दर्शनकिसी भी लौकिक ज्ञान सापेक्षिक सत्य के रूप में स्वीकार करता है। इनका मानना है कि उस निर्णय या ज्ञान के अलावा भी कोई निर्णय हो सकता है जो सत्य है। कहने का तात्पर्य ही है कि यह दर्शन सभी के प्रति उदार और सहिष्णु हैं । जैन दर्शन में व्यक्ति को देव के रूप में देखता है यहां तक कि यह कंकड़-पत्थर में भी जी की संकल्पना को स्वीकार करता है।

इसी तरह वसुधैव कुटुंबकम को जीवन का मूल तत्व प्रदान करते हुए गुरु गोविंद सिंह जी ने भेदरहित मानवता की उद्घोषणा की-

'मानस की जात सभै एकै पहिचनबो'

प्रश्न है कि वसुधैव कुटुंबकम क्यों आवश्यक है? वर्तमान में इसकी क्या प्रासंगिकता है? यदि हम वर्तमान पर नजर डालते हैं तो हमें प्राप्त होता है कि ज्ञान की दृष्टिकोण से हम काफी आगे हैं । जहां तक वैज्ञानिक ज्ञान का प्रश्न है हम अपने वैज्ञानिक उपलब्धियों , ऐसो-आराम हर तरह के साधनों की खोज कर चुके हैं और नवीन आयाम की खोज जारी भी है साथ-साथ थोड़ा बहुत आध्यात्मिक ज्ञान की ओर भी अग्रसर है। इस वैश्विकता के युग में हम अपने ज्ञान, आवश्यक वस्तुओं आदि का परस्पर आदान-प्रदान और सहयोग भी कर रहे हैं। परंतु फिर भी कुछ मूल्यों की कमी है इस आदान-प्रदान और सहयोग में प्रेम बंधन करुणा का अभाव है, और है तो केवल प्रतिस्पर्धा। भौतिकता के युग में सबसे ऊपर उठने की होड़ लगी है इसके लिए व्यक्ति या राष्ट्र किसी भी हद तक जा सकता है। इसी सर्वश्रेष्ठता की प्राप्ति की होड़ अर्थात मैं ही सर्वश्रेष्ठ हूँ, केवल मेरा देश महान है, मेरी जात और नस्ल बुद्धिमान और ज्ञानी है मेरी भाषा ही मूल और श्रेष्ठ हैं, इत्यादि। अपने को सबसे अलग स्थापित करने का जो भाव है और अपनी पहचान को बार-बार स्थापित करने का जो प्रयास है इसी को Exclusiveness कहतें है। इसी भाव के कारण लोग दो विश्व युद्धों को देख चुके हैं जिसका दुष्प्रभाव आज भी विद्यमान है।

आज सभी विश्व में शांति सहयोग और विकास चाहते हैं कोई युद्ध नहीं चाहता कोई भी हिरोशिमा और नगासाकी की तरह दूसरा विनाश नहीं चाहता। ऐसे विनाश को रोकने के लिए विश्व में कई संगठन बने हैं जिनमें से मुख्य संयुक्त राष्ट्र संघ है। संयुक्त राष्ट्र संघ अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं शांतिपूर्ण सह अस्तित्व का प्रतीक है। जो हमेशा वसुधैव कुटुंबकम की भावना के साथ संपूर्ण विश्व के कल्याण की कामना की है सभी राष्ट्रों के साथ शांतिपूर्ण ढंग से रहने की नीति को अपनाया है। जैसा कि संयुक्त राष्ट्र संघ के नाम से पता चलता है कि जिसका उद्देश्य सभी देशों को एकत्रित करना है इस उपभोक्तावादी युग में एक छोटी सी कोई भी घटना कहीं घटित होती है तो उसका प्रभाव संपूर्ण विश्व पर पड़ता है। यह प्रभाव वैश्वीकरण का रूप है वैश्वीकरण भी वसुधैव कुटुंबकम की तरह पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में ज्ञान और आवश्यक वस्तुओं के आदान-प्रदान तथा परस्पर सहयोग के रूप में देखता है।

प्रश्न है कि क्या ग्लोबलाइजेशन को वसुधैव कुटुंबकम का दर्जा दे सकते हैं? नहीं, इस ग्लोबलाइजेशन के कारण आतंकवाद, माओवाद, हिंसा-तनाव, जातिगत-भेद, नस्लगत-भेद, अधिनायकत्व का प्रादुर्भाव हुआ। वैश्वीकरण वहां प्रक्रिया है जो विश्व के सभी राष्ट्रों को आर्थिक-राजनीतिक और उपभोक्तावादी संबंधों के माध्यम से जोड़ती है। जबकि वही वसुधैव- कुटुंबकम में अध्यात्म और विज्ञान का सहसंबंध है। वैश्वीकरण वसुधैव कुटुंबकम से मिलता-जुलता है लेकिन वैश्वीकरण में आर्थिक तत्व प्रधान है जबकि वसुधैव कुटुंबकम में सांस्कृतिक, आध्यात्मिकता के साथ आर्थिक तत्व को वरीयता दी जाती है। संक्षेप में कह सकते हैं की वसुधैव कुटुंबकम वैश्वीकरण को अपने आप में समाहित किया हुआ है।

यदि संपूर्ण दुनिया को वसुधैव कुटुंबकम में समाहित करना है तो हमें राष्ट्रीय सीमाओं से परे सोचना शुरू करना होगा। हमें सब के कल्याण के लिए कर्म करना होगा। हमें जातीय, नस्लीय, धार्मिक, क्षेत्रीय, भाषीय आदि सभी भेदभाव से परे होकर एकता के सूत्र में बंधने का प्रयास करना होगा। ऋत के व्यवस्था के अनुरूप चलना होगा। हमें 'ऋतं सत्यम, सत्यम ऋतं' के आदर्श को स्वीकार करना पड़ेगा। विश्व बंधुत्व कोई निष्क्रिय अवधारणा नहीं है। चूंकि जब हम पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के तत्वों पर ध्यान देते हैं तो पाते है कि ये तत्व हमारे अंदर और बाहर वातावरण में भी मौजूद है, और इस तरह हम देखते है कि अन्य व्यक्ति या प्राणी भी इन्ही तत्वों से पुष्पित और पल्लवित हो रहे है। अर्थात इनका पालन-पोषण इन्ही के माध्यम से हो रहा है। और जब हमें यह यह अनुभूति होता है कि सभी व्यक्ति वही तत्व जो स्वयं में है तो हमारी अलग आत्म की भावना परात्म में परिवर्तित हो जाती है। इस अवस्था मे हमारा प्रेम समभाव का रूप ग्रहण कर लेता है । और इस प्रकार प्राप्य होता है कि हम और अन्य द्वतीय नही बल्कि अद्वतीय है। इस तरह

यह प्रक्रिया हमे विश्वबंधुत्व की ओर उन्मुख करती है। विश्वबन्धुत्व सार्वभौमिक नैतिकता एवं लोककल्याण के लिए एकमात्र सुरक्षित आधार है। यह मानवता और प्रकृति के कल्याण के लिए एक महान और सच्चे जीवन की आकांक्षा है।

Reference

[i] महोपनिषद्, अध्याय ४, श्लोक ७१

[ii] अथर्ववेद 12.1.12

[iii] नित्यानंद मिश्र,नीतिशास्त्र:सिद्धान्त और व्यवहार (दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 2014),421

[iv] Shrimad Bhagvadgita, (Gorakhpur: Gita Press, 2016), 177-78

[v] चंद्रधर शर्मा,भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन(दिल्ली:मोतीलाल बनारसीदास,2013), 60